महायोद्धा मातादीन का जन्म कलकत्ता से 16 मील दूर बैरकपुर छावनी में हुआ था। तोपों की गनगनाहट व फौजियों की कदम ताल की आवाज बचपन से ही देखने सुनने को मिली। बालक जब पैदा हुआ तो बाकी सब बच्चों की तरह सुन्दर, सलौना रंग, मोटी मोटी आंखें, चौडा माथा बहुत मोहक बालक था। जाति का कोई चिन्ह लेकर पैदा नही हुआ था। उस समय अछूतों को पढ़ने लिखने का अधिकार नहीं था। पढ़ने लिखने की कोशिश करने का मतलब होता था मौत का फरमान।

जब मातादीन कुछ बडा हुआ तो कबड्डी के खेल ने उसे आकर्षित किया। जब यह कबड्डी खेलने गांव के बच्चों के पास जाता उसे गालियां देकर अपनानित करके भगा दिया जाता। इसलिए मातादीन ने दूर के गांव में जाकर अपना शौक पूरा करने का सोचा जहां उसे कोई पहचानता ना हो। उसने बडे-बडे कबड्डी बाजों से पंजा लड़ाया और उन्हें मैदान में धूल चटाई। मगर वहां भी उसकी जाति का भंडा फूट ही गया और मातादीन के कबड्डी के मैदान में घुसने पर पाबन्दी लगा दी।

एक बार एक बहुत बड़ी घटना हुई। किसी बात पर मातादीन की एक हट्टे कट्टे सवर्ण पहलवान से खटक गई। वह पहलवान गाली गलौंच करता रहा। जैसे ही उसने मातादीन की मां-बहन को गालियां देना शुरू किया मातादीन ने चीते जैसी फुर्ती से उस पहलवान को चारों खानें चित कर दिया और उसकी छाती पर बैठ गया। मातादीन की पकड इतनी मजबूत थी कि सवर्ण पहलवान टस से मस भी नही हुआ गया। सब लोग मातादीन की वाह वाही कर रहे थे। तभी वहां से एक बनिया गुजरा उसने भी देखा कोई लम्बा चोडा पहलवान दूसरे पहलवान की छाती पर बैठा है। मातादीन की कमर उसकी तरफ थी तो बनिये ने कहा अगर इस पहलवान को अच्छा खाने पीने को मिले और यह थोडी और मेहनत करे तो यह इस इलाके का नाम सारे जहां में रोशन कर सकता है, पर जेसे ही उसने मातादीन का चेहरा देखा तो उसने कहा.....धत्त तेरे की यह तो हमारे गांव का भंगी का छोरा है ''यो के हमारे इलाके का नाम रोशन करेगा, भंगी कहीं का'' जैसे ही ये शब्द मातादीन के कानों में पड़े उनका मनोबल टूट गया और इसी का फायदा उठाकर नीचे का पहलवान ऊपर आ गया। यह देखते ही जो लोग मातादीन की वाह वाही कर रहे थे वे थू-थू करने लगे और कहने लगे कि इस भंगी की हिम्मत तो देखो जो हमसे ही पंजा लड़ाने चला था।

मातादीन के पूर्वज अंग्रेजों के सम्पर्क में आने के कारण सरकारी नौकरी में थे। मातादीन का जन्म भंगी जाति में होने के कारण आज तक बहुत से लोग यही समझते रहे कि वह अंग्रेजी फौज में सफाई कर्मचारी का कार्य करते होगें लेकिन वे खलासी के पद पर कार्यरत थे।

उस समय मनुवादी सवर्ण मानसिकता वाले खलीफा (उस्ताद) दलित समाज के युवाओं को अपना शागिर्द (शिष्य) नही बनाते थे। मातादीन भी पहलवानी के गुर सीखने के लिए कई मनुवादी सवर्ण मानसिकता वाले गुरुओं के पास गए और उनसे स्वयं को अपना शागिर्द (शिष्य) बनाने की प्रार्थना की, लेकिन सभी ने एक स्वर में जाति का ओछापन याद दिलाकर उनका अपमान किया किन्तु मातादीन ने निराश व हताश न होकर अपनी पूरी लगन से उस्ताद की तलाश की और उनकी मेहनत रंग लाई। कुछ दिन बाद मातादीन को इस्लामुद्दीन नाम के एक उस्ताद मिल गए। इस्लामुद्दीन बंगाली पलटन नं. 70 में बैंड बजाने का काम करते थे। मातादीन ने अपनी लगन और मेहनत से अपने उस्ताद का मन जीत लिया। मातादीन के नाम की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। जब वह लंगोट कस कर कुश्ती के लिए अखाड़े में उतरते तो चट्टान जैसा सीना और खम्ब जैसी जंघाओं को देखकर विरोधी पहलवान की कंपकंपी छूट जाती थी।

बैरकपुर की छावनी में उन्ही दिनों मंगल पांडे नाम का एक सिपाही भर्ती हुआ था। उसे भी पहलवानी का शौक था। यह सुबह-शाम दंड बैठक लगाया करता था। एक दिन वह उधर से गुजर रहा था जब मातादीन दंड-बैठक लगा रहा था और दूसरा पहलवान गिनने में लगा था। दौ सौ पचास दंड लगाने के बाद पलक झपकते ही कौने में रखे 10 किलो के मुकदर को उठा कर घुमाने लगा। मंगल पांडे के लिए यह किसी अचम्भे से कम नही था वह हैरान था। मंगल पांडे खुद भी दंड बैठक लगाता था। लेकिन डेढ़ सौ दौ सौ में ही पस्त हो जाता था। उसने ऐसा गबरू जवान आज तक नहीं देखा था।

कुछ दिन बाद सावन के महीने में गुरु इस्लामउद्दीन के अखाडे में कुश्ती प्रतियोगिता चल रही थी। मातादीन चार पांच पहलवानों को पस्त कर चुका था, किसी की हिम्मत उस से पंगा लेने की नहीं हुई। सवर्ण पहलवानों की हार देखकर मंगल पांडे विचलित हो रहा था पर मातादीन का भय उसे सताये हुए था। उसे पता था कि अगर मातादीन से मुकाबला हुआ तो उसे महंगा पड जाएगा। वह मन मसोसकर मातादीन की एक मुस्लिम पहलवान की छवि लेकर अपने घर चला आया था।

एक दिन फौज की कैंटीन के सामने पार्क में मातादीन और मंगल पांडे की दोबारा भेंट हुई। मंगल पांडे ने उनसे दोस्ती के लिए हाथ मिलाया। अब उनका साथ-साथ उठना बैठना था। वे देश की आजादी की बातें, देश की एकता, समता, समरसता की बातें किया करते थे। मंगल पांडे के लिए मातादीन मुसलमान था, पर एक दिन मातादीन ने सपष्टवादिता के कारण बातों बातों में मंगल पांडे को अपनी जाति और परिवार के सदस्यों के बारे में जिक्र कर डाला। मातादीन ने कहा कि अंग्रेज मेरे हाथों से भूने कबाब को बढ़ी खुशी से खाते हैं क्या स्वर्ण लोग हम भंगीयों के हाथ का छुआ या पका हुआ कुछ खा लेंगे ? मंगल पांडे मातादीन के इस अप्रत्याशित प्रश्न पर अवाक रह गया।

असली और सच्ची बात का भेद खुलने पर मंगल पांडे का व्यवहार अब उनके प्रति एकदम बदल गया। उसे एक मुसलमान का बलशाली पहलवान होना स्वीकार था लेकिन एक भंगी जाति का पहलवान..... कभी भी नहीं। उसी दिन से उसके सीने पर सांप लोट गया था उसका मन ग्लानि से भर गया था। उसे लगता था जैसे उसका सब कुछ लुट गया हो। मंगल पांडे एकान्त में अपना माथा पीटता था और सोचता था कि.. .एक भंगी से हाथ मिलाकर दोस्ती क्यों की ?

मंगल पांडे अच्छी तरह से जानता था कि पहलवानी के क्षेत्र में तो मातादीन को हरा सकना उसके बस की बात न थी। अब क्या किया जाए ? वह रात दिन इसी उधेड बुन में रहने लगा कि आखिर मातादीन को नीचा कैसे दिखाया जाए।

दूसरी ओर मातादीन की पहलवानी के किस्से अंग्रेजी फौज में जोरों पर थे। हर एक की जुबान पर मातादीन का ही नाम था। उडते-उडते यह खबर कमांडिंग आफिसर तक पहुंच गई थी। कमांडिंग आफिसर मातादीन से शीघ्र मिलना चाहते थे, क्योंकि वो भी पहलवानी का शौक रखते थे। उन्होने अपने सेवादार सिपाही द्वारा मातादीन को मिलने का संदेश भिजवाया। मातादीन उनसे मिलने आया और पूरे शिष्टाचार से सैल्यूट किया। माईकल साहब मातादीन का डील डौल शरीर देखकर हक्का बक्का रह गया। माईकल साहब ने उसे साथ में रखी कुर्सी पर बैठने को कहा। बातचीत चल रही थी कि उस समय वहां से एक शव-यात्रा गुजरी। लोग राम नाम सत्य है के साथ आगे बढ़ रहे थे। भीड के साथ एक युवती दुल्हन के रुप में सजी संवरी रोती बिलखती साथ चल रही थी। मातादीन और कमांडिंग आफिसर को देखकर उस युवती ने अपने प्राण रक्षा के लिए गुहार लगाई, हाथ भी हिलाया। लोग उसे धकेलते हुए ले जा रहे थे। माईकल साहब के समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होने मातादीन से इस बारे में पूछा तो मातादीन ने उन्हे समाज में प्रचलित भयानक सती प्रथा के बारे में विस्तार से बताया कि सवर्ण लोग सोच के अनुसार पति के मर जाने पर... कही स्त्री छोटी जाति में विवाह ना कर ले इस डर से किशोर व जवान विधवाओं को पति के साथ जबरदस्ती प्रथाओं के नाम पर आग में जला कर मार डालते हैं और अधेड व बुजुर्ग विधवा स्त्रियों को उनका सिर मुण्डवा कर उन्हे कांशी या वृन्दावन में मरने के लिए छोड आते हैं।

22 जनवरी 1857 की बात है कि मातादीन फौज के काम करके घर लौट रहा था। प्यास के कारण गला चिपक सा गया था। तभी उसने दूसरी ओर से मंगल पांडे को अपनी ओर आते देखा। उसके हाथ में पानी से भरा पीतल का लोटा था। मातादीन ने पसीना पौंछते हुए मंगल पांडे से पानी पीने के लिए लोटा मांगा और हाथ आगे बढ़ाया ही था कि मंगल पांडे बहुत जोर से चिल्लाते हुए बोला अरे.....भंगी, मेरा लोटा छूकर अपवित्र करेगा क्या ?

मंगल पांडे के मुख से ये शब्द सुन कर मातादीन के पैरों के नीचे से जैसे जनीन खिसक गई हो। वह कुछ पल तक उसकी ओर अपलक देखते रहे। कुछ ही देर में अब पूरी हकीकत उनके सामने थी। मातादीन ने अपने को संयमित करते हुए उन्होन पांडे से पूछा..... क्या हुआ तुम्हें, तबीयत तो ठीक है ना ?

''कुछ नही हुआ है मुझे, और मेरी तबीयत भी ठीक है.... अंग्रेजी फौज में नौकरी करने के बाद तू अपनी औकात ही भूल गया, अपनी खाल में रहा कर भंगी के बच्चे'' मंगल पाण्डे ने माथे पर सिलवटें डालते हुए कहा.....

''यार मंगल पांडे तुम जब भी मिलते हो तो देश की एकता, देशप्रेम, समता, व समरसता की बातें करते हो.'' तो मंगल पांडे ने कहा मैं एकता, समता, समरसता मुसलमानों व दूसरी कौम के साथ के लिए करता हूँ, तुम भंगियों के साथ बिल्कुल नहीं... मंगल पांडे ने मातादीन की बात को बीच में काटते हुए और अपना मुँह पिचकाते हुए कहा.....

मातादीन ने कहा कि ''देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा है और तुम सवर्ण (उच्च) जाति के बनकर ऊँच-नींच और छुआछूत की बातें कर रहे हो।''

मंगल पांडे ने सोचा था कि मातादीन उनके साथ गाली गलौंच करेगा, लेकिन मातादीन ने नम्रता के साथ कहा कि... पंडत तुम्हारी पंडताई उस समय कहां चली जाती है जब तुम और तुम्हारे जैसे दूसरे ब्राहम्ण सिपाही गाय और सुअर की चर्बी से बने कारतूशों को अपने मूंह में डाल कर उनकी परतें खोल कर बंदूक में भरकर चलाते हो ? ये सुअर और गाय की सप्लाई करने वाले भी ब्राहम्णवादी ही है। बात करते करते अब मातादीन के स्वर में भी तेजी आ गई और उनकी आँखें अंगारे सी दहकने लगी थी।

मातादीन की बातें सुन कर मंगल पांडे के होश उड़ गए थे। उसके पास बोलने को शब्द ही नहीं थे। कुछ देर बाद भरे हुए गले से इतना ही बोला... मातादीन तुमने मेरी आँखें खोल दी। मातादीन की कही बातें बैरक में आग की तरह फैल गई और बाद में 1857 की क्रांति का रूप ले लिया।

मातादीन की ये बातें मंगल पांडे तक ही सीमित नहीं रही बल्कि आग की तरह एक बटालियन से दूसरी बटालियन तक, एक छावनी से दूसरी छावनी तक फैलती चली गई। इन्ही शब्दों ने सेना में विद्रोह की स्थिति पैदा कर दी। ये विद्रोह और फैल गया जब 1 मार्च 1857 की सुबह परेड़ के मैदान में मंगल पांडे ने अंग्रेज आफिसर से पूछा कि तुम गोरे लोग हम से गाय और सुअर की चर्बी लगे कारतूशों का इस्तेमाल करवा कर हमारे धर्म के साथ खिलवाड़ कर रहे हो। ये कहकर उसने सैनिक अधिकारी को गोली मार दी। इससे छावनी में विद्रोह फैल गया। मातादीन ने विद्रोह करने वाले सैनिकों को अंग्रेजों द्वारा रखे गए हथियारों और गोला-बारूद के बारें में बता दिया। जिसका विद्रोहियों ने इसोमात किया।

अंग्रेजों ने 'विद्रोह फैलाने वालों की लिस्ट तैयार करके ब्रिटिश सरकार में मुकदमा दायर किया जिसमे पहला नाम मातादीन का था जो सैनिकों में विद्रोह भड़काने के लिए जिम्मेदार ठहराया गया। ये मुकदमा ब्रिटिश सरकार बनाम मातादीन के नाम पर चला। सभी गिरफदार क्रांन्तिकारियों को कोर्ट मार्शल के जरिए फांसी की सजा दी गई। मातादीन भी सबसे पहले 8 अप्रैल 1857 को मातृभूमि के लिए फांसी के फन्दे पर झूल गए व उसके बाद मंगल पांडे व दूसरे कान्तिकारियों को फांसी पर लटका दिया। जिसके विरोध मे 10 मई 1857 को मेरठ की छावनी ने बगावत कर दी जो कि क्रान्ति की ज्वाला बनकर उत्तर भारत में फैल गई।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कम्पनी से राजसत्ता का कंट्रोल अपने हाथ में ले लिया और ब्रिटिश महारानी ने ऐलान किया कि उनकी सरकार लोगों के धर्म के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी और उनकी सरकार ने सरकारी नौकरियों व स्कूल, कॉलेज और अस्पतालों में सभी लोगों को बिना जातिगत भेदभाव के भर्ती किए जाऐगें। इसके साथ ही अछूत लोगों के पढ़ने-लिखने का मार्ग खुल गया और सरकारी नौकरी में जाने अवसर मिला।

सब वीरों में वीर तू, मातादीन महान।
स्वतंत्रता संग्राम में, निकला सीना तान।।

इस वीर दलित योद्धा मातादीन को शत-शत नमन।

नमो बुद्धाय
भवतु सब्ब मंगलम

अत्त दीपो भव

SOCIAL ACTION GROUPS FOR AMBEDKARITE REFORM (SAGAR)
Office : 106, Sector-21B, Faridabad, Haryana

Printed By : Mansi Digital Graphic, Ballabgarh, Faridabad, Haryana

क्रान्तिकारी मातादीन जीवन परिचय

नाम	:	मातादीन क्रांतिकारी
पिता	:	श्री जयनारायण
जन्म	:	29 नवम्बर 1825
जन्म स्थान	:	बैरकपुर छावनी (कलकत्ता)
परिनिर्वाण	:	08 अप्रैल 1857